IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

दूरस्थ शिक्षा एवं भारतीय परिप्रेक्ष्य में भविष्य की संभावनाओं का एक अध्ययन।

अनुराज

स्नातकोत्तर (शिक्षा)

सारांशः– दूरस्थ शिक्षा का साधारण अर्थ है दूर से दी जाने वाली शिक्षा अर्थात् वह शिक्षा जो दूर से दी जाती हैं। दूरस्थ शिक्षा कहलाती है। यह एक ऐसी शिक्षा है जिसमे अध्यापक तथा विद्यार्थी आमने–सामने नहीं होते, बल्कि यह शिक्षा अध्यापक द्वारा अपने विद्यार्थियों को दूर से दी जाती है। विभिन्न देशों में इसे विभिन्न नामों से जाना जाता है। जैसे– Open-Learning, Independent Study, Extended Degree, Programme, off campus Education दूरस्थ शिक्षा में विभिन्न जनसाधारण साधनों का प्रयोग किया जाता। इसके अंतर्गत पाठ्यक्रम का निर्माण, साधनों का तैयार करना, पठन सामग्री भेजनें के विभिन्न तरीके तथा मूल्यांकन प्रक्रिया आदि आते हैं। इन पाठों की प्रकृति स्वयं सीखने के लिए भी प्रेरित करते हैं। 1985 में नई दिल्ली में इंदिरा गांधी राष्ट्रीय खुला विश्वविद्यालय स्थापित किया गया, जिससे देश की जनता को शिक्षा मिल सकें।

बीज शब्दः– दूरस्थ शिक्षा, पाठ्यक्रम, सामग्री, मूल्यांकन, विश्वविद्यालय।

दूरस्थ शिक्षा की आवश्यकता– जनसाधारण को शिक्षित करने में औपचारिक शिक्षा सफल नहीं हो पाई है। अतः देश की बढ़ती हुई जनसंख्या को शिक्षित करने के लिए दूरस्थ शिक्षा ही उभरकर आई है। यह शिक्षा पद्वति उन लोगों को भी शिक्षा देने में सहायक है, जो किसी कारणवश या सामाजिक , आर्थिक, शारीरिक या अन्य किसी घटना या मजबूरी के कारण शिक्षा से वंचित रह गए थे। वे नौकरी में रहते हुए भी अपनी शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। एक ओर तो शिक्षा को निःशुल्क सार्वभौमिक तथा अनिवार्य किए जाने की बात कही जाती है, दूसरी और उनके लिए पर्याप्त स्कूल भी नहीं खोले जाते, तो शिक्षा सार्वभौमिक कैसे बन सकती है? दूरस्थ शिक्षा इन सभी समस्याओं का समाधान कर सकती है क्योंकि यह शिक्षा औपचारिक शिक्षा

के एक विकल्प के रूप में उपस्थित हुई है। शिक्षा सभी के लिए हैं तथा शिक्षा सामाजिक गतिशीलता में विशेष रूप से सहायक है। अतः सामाजिक गतिशीलता में विशेष रूप से सहायक है। अतः समाज के सभी लोगों को शिक्षा सुविधाएँ मिलनी चाहिए, जो केवल दूरस्थ शिक्षा द्वारा ही संभव है।

दूरस्थ शिक्षा की अवधारणाः– शिक्षा तकनीकी दूरस्थ शिक्षा के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करती है। इसमें रेड़ियों तथा दूरदर्शन का उपयोग किया जाता हैं। इसके द्वारा सहायता प्रदान करके सामान्य शिक्षण को उत्तम बनाया जाता है। दूरस्थ शिक्षा द्वारा अनूदेशन में गुणात्मक विकास किया जाता है। इसके द्वारा सम्प्रेषण माध्यमों के घटकों तथा अधिगम प्रक्रिया में संबंध स्थापित करके उद्देश्यों की प्राप्ति की जाती है। दूरस्थ शिक्षा के द्वारा ग्रामीण तथा शहरी क्षेत्रों की असमानता तथा लड़के तथा लड़कियों की शिक्षा में पाई जाने वाली असमानता को दूर किया जा सकता है। अतः दूरस्थ शिक्षा परिवर्तनशील समाज में आवश्यकता के अनुसार 'विस्तार–शिक्षा' तथा 'निरन्तर– शिक्षा' का महत्वपूर्ण साधन हैं।

दूरस्थ शिक्षा के प्रसार संबंधी सुझावः–

1. दूरस्थ शिक्षा का प्रसार उन लोगों के लिए करना है जो गरीबी की रेखा से नीचे हैं तथा शिक्षण ग्रहण करने में असमर्थ हैं।
2. दूरस्थ शिक्षा का प्रसार ऐसे क्षेत्रों में करना चाहिए जहाँ शिक्षा की सुविधाएँ सुलभ नहीं है।
3. दूरस्थ शिक्षा के प्रसार के द्वारा 'सभी को शिक्षा के समान अवसरों' की सुविधा की व्यवस्था की गई है। शिक्षा संस्थाओं की सुविधा 25 प्रतिशत शहरी निवासियों के लिए है जबकि 75 प्रतिशत ग्रामीण निवासियों को दूरस्थ शिक्षा के अवसर दिए जाते हैं।
4. दूरस्थ शिक्षा का प्रसार निरौपचारिक शिक्षा के रूप में किया जाता है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में 15 से 35 वर्ष के आयु वर्ग के व्यक्तियों के लिए दूरस्थ शिक्षा की व्यवस्था की गई है।
5. दूरस्थ शिक्षा प्रयोग शिक्षा की आवश्यकता की पूर्ति के लिए करता है। जिन करोड़ों लोगों को स्कूल और कॉलेजों में औपचारिक रूप से शिक्षित नहीं किया जा सके उन्हें शिक्षित करने में दूरस्थ शिक्षा का विशेष महत्व है।

दूरस्थ शिक्षा के माध्यमः–

डाक द्वारा– छपे हुए पाठ विद्यार्थियों को डाक द्वारा उनके पास भेज दिए जाते हैं। ये व्याख्यान या गृह कार्य हो सकते हैं।

सम्पर्क कक्षाएँः– दूरस्थ शिक्षा के अंतर्गत 10 या 15 दिन तक विद्यार्थियों के कक्षा शिक्षण के लिए ये कक्षाएँ आयोजित की जाती हैं, जिनमें विद्यार्थी अपनी व्यक्तिगत तथा सामूहित कठिनाइयों तथा समस्याओं का समाधान कर सकते हैं।

टेलीफोन का प्रयोग द्वाराः– विश्व के प्रगतिशील देशों में दूरस्थ शिक्षा में टेलीफोन का प्रयोग किया जाता है। आजकल इसका विशेष प्रयोग आस्ट्रेलिया में किया जाता है। पाठ का समय, विषय आदि पहले से निश्चित कर लिए जाते हैं तथा विद्यार्थियों को इसकी पूर्व सुचना भी दी जाती है जिससे वे लाभ उठा सकें।

सुनने वाले कैसेट का प्रयोगः– अनुभवी अध्यापकों द्वारा सुनने वाले कैसेट तैयार किए जाते हैं तथा इन्हें सम्पर्क कक्षाओं में विभिन्न स्थानों पर विद्यार्थियों को सुनवाया जाता है।

खुला विश्वविद्यालयः– खुल विश्वविद्यालय से अभिप्राय ऐसे विश्वविद्यालयों से हैं जो दूर स्थान के लोगों के लिए शिक्षा नीतियों के कार्यान्वन के लिए शैक्षिक दर्शन, शिक्षा कार्यक्रमों तथा विभिन्न कोर्स पढ़ने के लिए खुले हैं। इसके द्वारा बहुत से विषयों तथा कार्यक्रमों की शिक्षा एक साथ दी जा सकती हे। यह विद्यालय उनके लिए खुला है जो किसी भी प्रकार की शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं।

भारत में दूरस्थ शिक्षा का भविष्यः–

भारत में दूरस्थ शिक्षा का भविष्य बहुत उज्ज्वल हैं। इसमें आकाशवाणी तथा दूरदर्शन के माध्यम से उन लोगों के लिए शिक्षा की व्यवस्था की गई है जो औपचारिक शिक्षा ग्रहण करने में किन्हीं कारणों से असमर्थ रहते हैं।

आकाश में इन्सेट 1–बी पृथ्वी की कक्षा में स्थित हैं जो आगामी सात वर्ष तक अंतरिक्ष में स्थित हैं। इसके द्वारा करोड़ों व्यक्तियों को शिक्षित किया जाएगा। भारत वर्ष में कई विश्वविद्यालयों में पत्राचार शिक्षा के द्वारा भी दूरस्थ शिक्षा दी जा रही है। गुजरात के कृषि विश्वविद्यालय ने लोगों को शिक्षित करने के लिए दूरस्थ शिक्षा को अपनाया है। भारत में हिमाचल, बम्बई, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान आदि प्रमुख राज्यों ने पत्राचार पाठ्यक्रम खुले विश्वविद्यालय तथा अन्य सम्प्रेषण माध्यमों का प्रयोग करके दूरस्थ शिक्षा के भविष्य को उज्ज्वल किया है।

निष्कर्ष– इस प्रकार दूरस्थ शिक्षा ने शैक्षिक जगत में एक क्रांति सी ला दी है। जो लोग अपने जीवन में किसी कारणवश शिक्षा से वंचित रह गए थे और जिन्हें शिक्षा प्राप्त करने की इच्छा है वे इन विश्वविद्यालयों के माध्यमों से अब भी शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। नौकरी या अन्य कोई काम करते–करते भी यह शिक्षा प्राप्त की जा सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. Desmond Keegan (1993): Theoretical Principles of Distance Education, Routledge.
2. Husain, M. (2004). Distanc Education: Theory and Practice, First edition, New Delhi: Anmol Publisher.
3. Michael G. Moore (2007). Handbook of Distance Education, First ediction, L.Erlbaum Associates.
4. Greg Kearsley, Michael G. Moore (1996)L Distance Education: a systems view, second edition, wadsworth Pub. Co.
5. Sharma, Dinesh C. (2006). Management of Distance Education, First Editional, New Delhi: Anmol Publisher.
6. Venkataiah, S. (2000). High and Distance Education, First edition, New Delhi: Anmol Publisher.
7. Desmon Keegan (1996). Foundations of Distance Education, Psychology Press.